अनंत शक्ति की चाबी



हर साधक में अनंत शक्ति है, जिसका निवास उसके मन में है। अनंत साधना का प्रयोजन है उस अनंत शक्ति से साधक के संपर्क सूत्र को जोड़ देना।

अनंत शक्ति का स्रोत

हर साधक में अनंत शक्ति है, जिसका निवास उसके मन में है। अनंत साधना का प्रयोजन है उस अनंत शक्ति से साधक के संपर्क सूत्र को जोड़ देना।

हम सब ऊर्जा की प्रतिमूर्ति हैं। हमारी ऊर्जा का सबसे बड़ा भंडार हमारे मन में स्थित है। जब हम अपने मन से संपर्क स्थापित कर लेते हैं, तब हमें उस खजाने की चाबी मिल जाती है जो सदैव से हमारी ही थी, परंतु जिसका ज्ञान हमें नहीं था। वही खजाना है, हमारे मन की शक्ति।

किन्तु समस्या यह है कि हम अपनी शक्ति का आकलन केवल शारीरिक बल के आधार पर करते हैं और यही हमारी उन्नति में सबसे बड़ी बाधा बन जाता है।

सोचिए, जब कोई कलाकार एक अद्भुत चित्र बनाता है, कोई कवि अमर कविता रचता है या कोई वैज्ञानिक महान आविष्कार करता है, तो उसकी प्रेरणा का वास्तविक स्रोत क्या होता है?

वह है, मन की शक्ति। शारीरिक बल केवल विचारों को कर्म में परिवर्तित करने का माध्यम है, वह उन विचारों का कारण नहीं है।

मन और शरीर के बीच यदि किसी एक को प्रधान माना जाए, तो वह मन है। परंतु हमने शरीर को ही सबसे अधिक महत्त्व देना आरंभ कर दिया है, क्योंकि शरीर की आवश्यकताएं बहुत तीव्र है और बार-बार सामने आती हैं, जैसे भूख, प्यास और निद्रा, यदि इन्हें समय पर पूरा न किया जाए तो शरीर दुर्बल हो जाता है।

एक दुर्बल शरीर रोगग्रस्त हो सकता है। उसे ज्वर हो सकता है, पीड़ा हो सकती है। परंतु, एक दुर्बल मन हमारी अनंत शक्ति को क्षीण कर देता है। इसका परिणाम होता है हम अपने जीवन को संकुचित कर देते हैं, महानता से दूर हो जाते हैं।

शरीर के ज्वर को मापने के लिए थर्मामीटर है, रक्तचाप मापने के लिए यंत्र है, अनेक प्रकार की चिकित्सीय जांच उपलब्ध हैं। लेकिन मन अस्वस्थ है, इसका पता कैसे चले?

बीमार मन की पहचान

इसे जानने का सूत्र है मनोभाव। हमारे मनोभाव का सीधा सम्बन्ध मस्तिष्क से है। मस्तिष्क पूरे शरीर का संचालन करता है और मन उसके लिए निर्देशक का कार्य करता है। मन, शरीर में होने वाले प्रत्येक परिवर्तन का अदृश्य रिमोट कंट्रोल है। मन के भावों को शरीर तक पहुंचने में कुछ समय लग सकता है, किन्तु मस्तिष्क तो उसी क्षण उनका प्रतिबिंब बन जाता है। जब मन बिखर जाता है, तब मस्तिष्क तनाव ग्रस्त हो जाता है। जब मन भय से भर जाता है, तब मस्तिष्क की कार्यक्षमता भी प्रभावित होने लगती है।

बुद्धि की शक्ति और मन की शक्ति भिन्न नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे से गहराई से संयुक्त हैं। यदि मन चिड़चिड़ा, अशांत और क्रुद्ध है, तो वह बुद्धि को भी दिग्भ्रमित कर देता है। हमारी निर्णय लेने की क्षमता, विवेक और सोचने की शक्ति मन की अवस्था से ही प्रभावित होती है।

हमारे शरीर की डोर मन के हाथों में है। **मन सारथी है और शरीर रथ। मन जैसा होगा, शरीर भी वैसा ही होगा।**

यदि मन दुर्बल, भयभीत और तनावग्रस्त है, तो उसका प्रभाव शरीर पर भी स्पष्ट दिखाई देगा। इसके विपरीत यदि मन प्रसन्न, स्थिर और संतुलित है, तो शरीर भी उसी अनुरूप स्वस्थ और ऊर्जावान रहेगा।

इसलिए एक सुदृढ़, शांत और संतुलित मन केवल स्वस्थ शरीर के लिए आवश्यक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य भी है।

एक बीमार मन अत्यधिक चिंतन और मनन करता रहता है। इसे ओवरथिंकिंग कहा जाता है। वह स्पर्धा में इतना डूब जाता है कि स्वयं को भूल जाता है। वह अत्यधिक संवेदनशील होता है और भीतर ही भीतर आत्मग्लानि से भरा रहता है। आत्मग्लानि के कारण उसका आत्मविश्वास क्षीण हो जाता है और वह कई बार दूसरों के सामने कमजोर, निम्न स्तर के व्यक्ति की तरह व्यवहार करने लगता है। उसे ऐसा प्रतीत होता है कि हर व्यक्ति उसका अपमान कर रहा है। छोटी-छोटी बातें भी उसे गहराई से आहत कर देती हैं। उसका हास्य बोध समाप्त होने लगता है। उसमें स्वयं को बड़ा सिद्ध करने की इच्छा रहती है। वह दिखावा करता है और चाहता है कि लोग उसकी महत्ता को स्वीकार करें।

महत्वपूर्ण बात यह है कि मन में ब्रह्म का निवास है, इसलिए उसे किसी के सामने स्वयं को सिद्ध करने की कोई आवश्यकता नहीं होती। आवश्यकता केवल इस बात की है कि वह अपनी अनंत शक्ति के कोश की चाबी प्राप्त करे, जिससे वह उस दिव्य शक्ति का पूर्ण उपयोग कर सके।

जानते हो, वह चाबी क्या है? वह चाबी एक नहीं, बल्कि तीन हैं -

1. **'महत्त्वाकांक्षा', जो जीवन को ऊंचे लक्ष्य देती है।**
2. **'साधना', जो उन लक्ष्यों तक पहुंचने की शक्ति और पात्रता प्रदान करती है।**
3. **'धैर्य', जो कठिनाइयों के बीच भी साधक को मार्ग से विचलित नहीं होने देता।**

इन्हीं तीन चाबियों से मनुष्य अपने भीतर छिपे अनंत सामर्थ्य के द्वार खोल सकता है।

सफलता की तीन चाबियां :

चंद्रगुप्त मौर्य के जीवन में इन तीनों चाबियों का अद्भुत संगम दिखाई देता है।

एक समय था जब चंद्रगुप्त के पास न विशाल सेना थी, न धन था, न कोई बड़ा राज्य। सामान्य परिस्थितियों में जन्मे उस युवक ने एक ऐसा स्वप्न देखा जिसे उस समय लगभग असंभव माना जाता था, समस्त भारत को एक शक्तिशाली साम्राज्य के रूप में संगठित करना। यही थी उसकी **महत्त्वाकांक्षा**। यदि लक्ष्य छोटा होता, तो इतिहास भी छोटा होता।

पर केवल स्वप्न देखने से साम्राज्य नहीं बनते। आचार्य चाणक्य के मार्गदर्शन में चंद्रगुप्त ने वर्षों तक युद्धकला, राजनीति, कूटनीति, अनुशासन और नेतृत्व का कठोर अभ्यास किया। उसने अपने शरीर को तपाया, बुद्धि को पैना किया और मन को संयमित किया। यही थी उसकी **साधना**। साधना ने उसे उस महान लक्ष्य के योग्य बनाया।

फिर भी सफलता एक ही प्रयास में नहीं मिली। प्रारंभिक युद्धों में उसे पराजय का सामना करना पड़ा। कई बार उसे पीछे हटना पड़ा, जंगलों में भटकना पड़ा, अपनी योजनाएं बदलनी पड़ीं। यदि वह उन असफलताओं से टूट जाता, तो शायद इतिहास में उसका नाम भी न होता। किंतु उसने हार को अंत नहीं, शिक्षा माना। यही था उसका **धैर्य।**

अंततः वही युवक, जिसके पास प्रारंभ में कुछ भी नहीं था, नंद साम्राज्य को परास्त कर अखंड भारत के सबसे विशाल साम्राज्यों में से एक का निर्माता बना।

गुरु की कृपा से चंद्रगुप्त मौर्य अपने शक्ति कोष को खोलने में सफल हुए क्योंकि गुरु ने उन्हें निराश नहीं होने दिया।

सत्य है, गुरु के मार्गदर्शन के अभाव में साधक इस अनंत शक्ति को खोल नहीं सकता है। साधना पथ कठिन है। सफलता अधिकांशतः पहले प्रयास में प्राप्त नहीं होती।

साधक का मन एक दोधारी तलवार के समान होता है। वह एक ओर उसके शत्रुओं पर प्रहार करता है, तो दूसरी ओर असफलता की स्थिति में उसी के आत्मविश्वास को भी जर्जर कर देता है।

गुरु साधक को वही विद्या सिखाते हैं, जिससे वह अपने मन पर नियंत्रण स्थापित कर सके। जब मन नियंत्रित हो जाता है, तब उसके भीतर सुप्त पड़ी अनंत शक्तियां जागृत होने लगती हैं, और वही जागृत शक्ति उसे सफलता के शिखर तक पहुंचा देती है।